27004 - ईदैन की नमाज़ को ईद के दिन के बाद तक विलंब करना

प्रश्न

क्या ईद की नमाज़ को शव्वाल की अमावस्या के दिन से दूसरे दिन तक विलंब करना जायज़ है, ताकि फ़ैक्टरियों और दफ्तरों में काम करने वाले सभी मुसलमान ईद के दिन अधिकारियों से छुट्टी प्राप्त कर सकें? चूँकि उन्हें ईद के दिन का पहले से पता नहीं होता है, इसलिए उनके लिए अधिकारियों को छुट्टी के लिए एक विशिष्ट दिन के बारे में बताना मुश्किल होता है।

विस्तृत उत्तर

ईद की नमाज़ फ़र्ज़-ए-किफ़ाया (एक सांप्रदायिक दायित्व) है। यदि पर्याप्त लोग इसे कर लेते हैं, तो बाक़ी लोग पाप से मुक्त हो जाते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि यह जुमे की नमाज़ की तरह फ़र्ज़-ए-ऐन (एक व्यक्तिगत दायित्व) है। चूँकि इस्लामिक केंद्र ईद की नमाज़ अमावस्या (चाँद) को देखने के आधार पर आयोजित करता है; इसलिए जो लोग इसमें शामिल नहीं हुए थे, वे इस सांप्रदायिक दायित्व से मुक्त हो जाते हैं। इस नमाज़ को शव्वाल के दूसरे या तीसरे दिन तक विलंब करना जायज़ नहीं है ताकि लंदन के सभी मुसलमान इसमें शामिल हो सकें; क्योंकि यह विलंब सहाबा और उनके बाद के लोगों की सर्वसहमति के विपरीत है। हम किसी ऐसे विद्वान के बारे में नहीं जानते जिसने यह बात कही हो। हाँ, ईद की नमाज़ को दूसरे दिन तक इस स्थिति में विलंब करना जायज़ है जब उन्हें ईद का ज्ञान सूरज ढलने के बाद हुआ हो।

और अल्लाह ही तौफ़ीक़ प्रदान करने वाला है।